प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 2 (2019–20)

हिन्दी – अ (कोड–002)

कक्षा– 10

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 10

संसार में रहकर यहाँ की परिस्थितियों का सही लाभ प्राप्त करने के लिए विचारों के महत्त्व को स्वीकार किया जाता है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए विचारशक्ति के सदुपयोग की जरूरत होती है, इससे मुमुक्षुता प्राप्त होती है। प्रत्येक विचार अपनी अनुकूल दिशा में फैलकर प्रभाव पाता है। अपने स्वरूप के अनुसार वह उधर से उसी प्रकार का बल लाता है, जिससे सजातीय विचारों की, तदनुरूप गुण–धर्म की पुष्टि होती है। पवित्र और स्वार्थरहित विचार शांति तथा प्रसन्नता ही स्वर्गिक परिस्थितियों का निर्माण करते हैं। स्वर्ग और नरक सब विचारों की ही महिमा है। पाप या पुण्य, प्रकाश या अंधकार, दुःख या सुख की ओर मनुष्य अपने विचार–पथ के द्वारा ही अग्रसर होता है। आंतरिक अपवित्रता की दुर्गंध या पवित्रता की सुगंध भी विचारों के द्वारा ही फैलती है। गुण–अवगुण सब मनुष्य का भला–बुरा अस्तित्व होता है।

1. विचारों के द्वारा किसकी दुर्गंध व सुगंध फैलती है? 2

उत्तर : विचारों के द्वारा ही आंतरिक अपवित्रता की दुर्गंध या पवित्रता की सुगंध फैलती है।

2. विचारों के महत्त्व को क्यों स्वीकार किया जाता है और विचारशक्ति के सदुपयोग की जरूरत क्यों होती है? 2

उत्तर : संसार में रहकर यहाँ की परिस्थितियों का सही लाभ प्राप्त करने के लिए विचारों के महत्त्व को स्वीकार किया जाता है और ज्ञान प्राप्त करने के लिए विचारशक्ति के सदुपयोग की जरूरत होती है।

3. सजातीय विचारों के गुण–धर्म की पुष्टि कब होती है? 2

उत्तर : प्रत्येक विचार अपनी अनुकूल दिशा में फैलकर प्रभाव पाता है और अपने स्वरूप के अनुसार वह उधर से उसी प्रकार का बल लाता है, जिससे सजातीय विचारों के गुण–धर्म की पुष्टि होती है।

4. मनुष्य अपने विचार–पथ के द्वारा किसकी ओर अग्रसर होता है? 2

उत्तर : मनुष्य अपने विचार–पथ के द्वारा पाप या पुण्य, प्रकाश या अंधकार, दुख या सुख की ओर अग्रसर होता है।

5. विचारों की क्या महिमा है? 1

उत्तर : स्वर्ग और नरक सब विचारों की ही महिमा है।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : विचारों का महत्व।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. नन्हा पौधा मस्ती से झूम रहा है। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : जो नन्हा पौधा है, वह मस्ती से झूम रहा है।

2. आप यहाँ बैठकर आराम कीजिए। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : आप यहाँ बैठिए और आराम कीजिए।

3. जैसे ही सुबह हुई, वैसे ही पक्षी चहचहाने लगे। (रचना के अनुसार वाक्य–भेद लिखिए)

उत्तर : मिश्र वाक्य

4. रोहन ने सोहन से नेपाल चलने के लिए कहा। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : रोहन ने सोहन से कहा कि वह भी नेपाल चले।

3. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. सरिता नाच रही है। (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : सरिता से नाचा जा रहा है।

2. माता जी से मंदिर जाया जाता है। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : माता जी मंदिर जाती हैं।

3. माँ ने माधव को पढ़ाया। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : माँ द्वारा माधव को पढ़ाया गया।

4. वह मुम्बई कैसे जाएगा? (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : उससे मुम्बई कैसे जाया जाएगा?

4. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. सफलता परिश्रम करने वालों के चरण चूमती है।

उत्तर : भाववाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ताकारक, **चूमती है** क्रिया का कर्ता।

2. लता मंगेशकर प्रसिद्ध गायिका है।

उत्तर : गुणवाचक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, गायिका-विशेष्य।

3. अध्यापक ने बच्चों को पढ़ाया।

उत्तर : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ताकारक।

4. अहा! कितने सुंदर फूल खिले हैं।

उत्तर : अव्यय, विस्मयादिबोधक, प्रशंसासूचक।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए $1 \times 4 = 4$

1. शृंगार रस की परिभाषा दीजिए।

उत्तर : जो रचना मानव हृदय के काम को उद्दीप्त करे, वहाँ शृंगार रस होता है।

2. निम्नलिखित काव्य पंक्ति में प्रयुक्त रस का नाम लिखिए।
इहाँ कुम्हण बतिया कोउ नाहिं,
जे तर्जनी देखि मर जाहीं।

उत्तर : रौद्र रस।

3. निम्नलिखित काव्य पंक्ति में प्रयुक्त रस का नाम लिखिए।
बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करैं भौंहनु हंसे दैन कहै नटि जाइ।।

उत्तर : शृंगार रस।

4. निम्नलिखित काव्य पंक्ति में प्रयुक्त रस का नाम लिखिए।
जब सुख का नींद कढ़ा तकिया, इस सिर के नीचे आता है।
तो सच कहता हूँ- इस सिर में इंजन जैसे लग जाता है।

उत्तर : हास्य रस।

5. वीभत्स रस का स्थायी भाव लिखिए।

उत्तर : **जुगुप्सा**।

खण्ड-ग 34

(पाठ्य-पुस्तक एवं पूरक पाठ्य-पुस्तक)

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 6

लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वाले खीरे के इस्तेमाल का तरीका जानते हैं। ग्राहक के लिए जीरा मिला नमक और पिसी हुई लाल मिर्च की पुड़िया भी हाजिर कर देते हैं। नवाब साहब ने बहुत करीने से खीरे की फाँकों पर जीरा मिला नमक और लाल मिर्च की सुर्खी बुरक दी। उनकी प्रत्येक भाव-भंगिमा और जबड़ों के स्फुरण से स्पष्ट था कि उस प्रक्रिया में उनका मुख खीरे के रसास्वादन की कल्पना से प्लावित हो रहा था। हम कनखियों से देख रहे थे, मियाँ रईस बनते हैं, लेकिन लोगों की नजरों से बच सकने के खयाल में अपनी असलियत पर उतर आए हैं।

1. लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वाले इसके इस्तेमाल का कौनसा तरीका जानते हैं? 2

उत्तर : लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वाले ग्राहक के लिए खीरे के साथ-साथ जीरा मिला नमक और पिसी हुई लाल मिर्च की पुड़िया भी हाजिर कर देते हैं।

2. नवाब साहब ने बहुत करीने से क्या किया? 2

उत्तर : नवाब साहब ने बहुत करीने से खीरे की फाँकों पर जीरा-मिला नमक और लाल मिर्च की सुर्खी बुरक दी।

3. नवाब साहब की भाव-भंगिमा और जबड़ों के स्फुरण से क्या स्पष्ट था? 2

उत्तर : नवाब साहब की भाव-भंगिमा और जबड़ों के स्फुरण से स्पष्ट था कि खीरे के स्वाद की कल्पना से उनके मुँह में पानी आ रहा है, लेकिन लोगों की नजरों से बचने के लिए वे उसे छुपा रहे थे।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए- $2 \times 4 = 8$

1. फादर बुल्के ने सन्यासी की परम्परागत छवि से अलग एक नई छवि प्रस्तुत की है, कैसे?

उत्तर : परम्परागत सन्यासी ईश्वर की भक्ति, ज्ञानार्जन अथवा ज्ञान देने में ही अपना समय व्यतीत करते हैं। वे किसी के घर नहीं आते-जाते। फादर बुल्के इन अर्थों में सन्यासी नहीं थे। वे रिश्तों को जीवन भर निभाते थे। उन्हें अपने परिवार की चिंता भले ही न थी किंतु वे लेखक के सुख-दुख के भागी थे।

2. शहनाई की दुनिया में डुमराँव गाँव को क्यों याद किया जाता है?

उत्तर : शहनाई की दुनिया में डुमराँव गाँव को इसलिए याद किया जाता है क्योंकि शहनाई बजाने के लिए जिस **रीड** का प्रयोग होता है, वह डुमराँव गाँव में सोन नदी के किनारों पर पाई जाती हैं। प्रसिद्ध शहनाई वादक बिस्मिल्लाह खाँ का जन्म भी यहीं हुआ था।

3. सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

उत्तर : सेनानी न होते हुए भी चश्मे वाले को लोग कैप्टन निम्नलिखित कारणों से कहते थे–

1. **देशप्रेम के कारण–** चश्मेवाला (कैप्टन) देशभक्त था। नेता जी की बगैर चश्मे की प्रतिमा देखकर उसका मन आहत हुआ था। उसने मूर्ति को चश्मा पहनाकर जो भावना प्रकट की, उसे देख लोगों ने उसे कैप्टन नाम दे दिया।
2. **नेतृत्व शक्ति के कारण–** चश्मेवाला कस्बे का अगुआ था, वह समाज एवं देश से जुड़े कार्यों में कुछ अनुचित होते हुए नहीं देखना चाहता था, इसके लिए वह तुरंत आगे आकर नेतृत्व करता था।
3. **अन्य कारण–** कस्बे के कुछ लोग तन से मरियल एवं वृद्ध चश्मेवाले के हृदयस्थ भावों को समझते थे और सम्मान से उसे कैप्टन कहकर पुकारते थे।

4. लेखिका पिताजी की किस विरोधाभासी प्रवृत्ति पर विचार करती है?

उत्तर : लेखिका के पिता एक ओर तो विशिष्ट बनने और बनाने की प्रबल लालसा लिए हुए थे तो दूसरी ओर अपनी सामाजिक छवि के प्रति भी उतने ही सजग थे। कभी तो वे लेखिका के इस प्रकार आन्दोलनों में भाग लेने पर अपना क्रोध प्रकट करते हैं परन्तु दूसरे ही क्षण लेखिका के इस प्रकार के कार्यों पर समाज के लोगों द्वारा प्रशंसा किए जाने पर गर्व का अनुभव करते हैं। लेखिका पिता की इसी विरोधाभासी प्रवृत्ति पर विचार करती हैं।

5. पाठ में आए उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए, जिनमें फादर बुल्के का हिंदी–प्रेम प्रकट होता है।

उत्तर : अपने विचारों के अनुरूप भारत आकर फादर यहाँ बस गए। वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते थे। हिन्दी भाषियों के द्वारा हिंदी की उपेक्षा उन्हें गहरा दुख देती थी। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए वे सदा मंच से अकाट्य तर्क देते थे। सन् 1950 में प्रयाग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से शोधप्रबंध रामकथा : उत्पत्ति और विकास पूरा किया। **नीली पंछी** के नाम से मातरलिंक के प्रसिद्ध नाटक **ब्लू बर्ड** का हिंदी में रूपान्तरण किया। अंग्रेजी–हिन्दी का एक शब्दकोश तैयार किया।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 6

लखन कहा हसि हमरे जाना।
सुनहु देव सब धनुष समाना।।
का छति लाभु जून धनु तोरें।
देखा राम नयन के भोरें।।
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू।
मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू।।
बोले चितै परसु की ओरा।
रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा।।
बालकु बोलि बधौं नहि तोही।
केवल मुनि जड़ जानहि मोही।।
बाल ब्रह्मचारी अति कोही।
बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही।।
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही।
बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही।।
सहसबाहुभुज छेदनिहारा।
परसु बिलोकु महीपकुमारा।।
मातु पितहि जानि सोचबस करसि महीसकिसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर।।

1. लक्ष्मण ने धनुष खण्डित होने के क्या–क्या कारण बताए?2

उत्तर : लक्ष्मण ने धनुष खण्डित होने के निम्नलिखित कारण बताए–

1. वह धनुष पुराना और कमजोर था।
2. श्रीराम ने उसे नया समझकर उठा लिया।
3. श्रीराम की दृष्टि को धोखा हो गया।

2. बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्हीं, का क्या आशय है? 2

उत्तर : बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्हीं का आशय है कि परशुराम क्षत्रिय कुलद्रोही हैं अर्थात् दुष्ट क्षत्रिय परिवारों के सबसे बड़े दुश्मन हैं और उन्होंने दुष्ट क्षत्रिय राजाओं को मारकर उनका राज्य अनेक बार ब्राह्मणों को दान कर दिया।

3. परशुराम ने अपने फरसे की क्या विशेषताएँ बताई हैं? 2

उत्तर : परशुराम ने अपने फरसे की विशेषता बताई है कि उनका फरसा अनेक बार क्षत्रियों को मार चुका है। इसने सहस्रबाहु की भुजाएँ काटी हैं। मेरा फरसा बहुत भयंकर है। इसके नाद और भय से गर्भस्थ शिशु भी मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नही हट रही है?

उत्तर : कवि की आँख फागुन की सुंदरता से इसलिए नहीं हट रही है क्योंकि प्रकृति अपने नवीन रंग–रूप–गंध से उसे जीवन के प्रति एक नवीन ऊर्जा से भर रही है, कवि सुंदरता से परिपूर्ण प्रकृति, जीवन को नवीन संदर्भों में देखकर चकित है। इस अनुपम शोभा को वह टकटकी लगाकर देख रहा है। उसकी आँखें चाहकर भी उस अद्वितीय सौंदर्य से हट नहीं पा रही हैं।

2. **कन्यादान** कविता का मूल भाव लिखिए।

उत्तर : **कन्यादान** कविता नारी जागृति से संबंधित है। इसमें स्त्री के परम्परागत रूप से हटकर यथार्थ रूप का बोध कराया गया है। यह कविता स्त्री की कमजोरियों को भी उजागर करती है। यदि स्त्री अपनी कमजोरियों के प्रति सचेत हो जाए,

अपनी कोमलता और सरलता के प्रति सजग हो जाए तो वह शक्तिशाली बन सकती है और प्रतिकूलताओं पर विजय पा सकती है।

3. **दुविधा हत साहस** से कवि का क्या अभिप्राय है? **छाया मत छूना** के आधार पर बताइए।

उत्तर : कवि कहना चाहते हैं कि सही–गलत, सफलता–असफलता के भ्रम के कारण मन में साहस नहीं जग पाता। जब मनुष्य का मन ही सही निर्णय नहीं कर पाता, तो उसका साहस भी समाप्त हो जाता है और वह हताश हो जाता है।

4. संगतकार की आवाज सुंदर, कमजोर और काँपती हुई क्यों नजर आती है?

उत्तर : संगतकार की आवाज मुख्य गायक की गरजदार तथा भारी–भरकम आवाज को कोमलता प्रदान करती है। वह अपनी आवाज को कभी ऊपर नहीं उठाना चाहता। वह मुख्य गायक की आवाज की बराबरी भी नहीं करना चाहता। इसलिए इसकी आवाज सुंदर, कमजोर और काँपती हुई नजर आती है।

5. साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है। इस कथन पर अपने विचार लिखें।

उत्तर : शक्ति के साथ साहस का जुड़ना सोने में सुहागा का काम करता है। जीवन में सफलता रूपी लक्ष्य के लिए शक्ति और साहस दोनों अनिवार्य हैं, परन्तु अगर ये अहंकार से युक्त हो जाएँ तो अपनी गरिमा खोने लगते हैं। अतः विनम्रता के साथ इनका बँधना आवश्यक है। विनम्र बनकर इन दोनों गुणों का चमत्कारी प्रभाव सफलता के लिए ही नहीं, बल्कि शत्रु पक्ष को भी सोचने को मजबूर कर देता है। अपनी गलतियों को सुधारने में वह सहायक बनता है और युद्ध जैसी बड़ी समस्याओं को न केवल सुलझाने, बल्कि टालने में भी सहायता करता है।

उत्तर :

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50–60 शब्दों में लिखिए– $3 \times 2 = 6$

1. देश की सीमा पर बैठे फौजी अनेक प्रकार की कठिनाइयों से जूझते हुए देश की रक्षा का दायित्व निभाते हैं। उनके प्रति हमारा क्या उत्तरदायित्व होना चाहिए?

उत्तर : देश की सीमा पर बैठे फौजी सर्दी, गर्मी और वर्षा के मौसम की भीषणता को सहन करते हुए देश की सेवा में डटे रहते हैं। उनके प्रति हमारा उत्तरदायित्व यही है कि उनकी देशसेवा को हम अपना आदर्श बनाएँ। उनका और उनके घरवालों का सम्मान करें। उनकी सुख–सुविधाओं का ध्यान रखें। देश की भौतिक एवं सामाजिक व्यवस्था को न बिगाड़ें। देश में बने नियमों का पालन करें और जीवन में सदा उच्च मूल्यों को स्थान दें। हमारा यह भी दायित्व है कि हम देश के भीतर बैठे शत्रुओं के गलत इरादों को किसी भी प्रकार का समर्थन न दें।

2. रानी एलिजाबेथ के दर्जी की परेशानी का क्या कारण था? उसकी परेशानी को आप किस तरह तर्कसंगत ठहराएँगे?

उत्तर : रानी एलिजाबेथ के दर्जी की परेशानी का कारण स्थिति के अनुकूल उनकी बनाई जाने वाली पोशाकें थीं। वह यह नहीं समझ पा रहा था कि उनके हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और नेपाल के दौरे के लिए वह कैसी पौशाकें बनाए कि रानी प्रसन्न हो जाए। उसने रानी के हिन्दुस्तान के दौरे के लिए हिन्दुस्तान से नीले रंग का रेशमी कपड़ा मँगवाकर सूट बनाया था। फिर भी रानी का दर्जी होने के कारण उसका समाज में सम्मान था। उसे अच्छा धन भी प्राप्त होता था। वह उस देश का नागरिक भी था। अतः सम्मान, धन और कर्तव्य को देखते हुए हमें उसकी चिंता तर्कसंगत लगती है।

3. **माता का अँचल** पाठ में किन उदाहरणों से पता चलता है कि भोलानाथ के पिता भक्ति–भावना रखते थे?

उत्तर : **माता का अँचल** पाठ में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जिनसे पता चलता है कि भोलानाथ के पिता भक्ति–भावना रखते थे। वे प्रतिदिन सुबह उठकर नहाते थे और पूजा–पाठ करते थे। भोलानाथ यानी तारकेश्वर के पिता रामायण का पाठ किया करते थे। पूजा–पाठ करने के बाद वे राम–नाम लिखने लगते थे। अपनी रोजनामा बही पर हजार बार राम–नाम लिखकर वे उसे पाठ करने की पोथी के साथ बाँधकर रख देते थे। फिर मछलियों के आहार के साथ लपेटने के लिए पाँच सौ बार राम–नाम कागज के छोटे–छोटे टुकड़ों पर अलग से लिखते थे।

खण्ड–घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए– 10

(1) मेरा भारत बड़ा निराला

संकेत बिंदु : भूमिका ✲ भारत की प्राचीन संस्कृति ✲ यहाँ की प्राकृतिक भिन्नताएँ ✲ अनेक धर्म, जातियाँ, बोलियाँ, उनकी वेशभूषा, रहन–सहन का अंतर, अनेकता में एकता ✲ उपसंहार

(2) मानव जीवन में खेलों का महत्व

संकेत : भूमिका ✲ खेलों के प्रकार ✲ जीवन में खेलों की आवश्यकता ✲ खेल भावना का प्रभाव ✲ हार–जीत का महत्त्व ✲ खेलों की लोकप्रियता का आर्थिक महत्व ✲

(3) यदि मैं विद्यालय की प्राधानाचार्या होती

संकेत : भूमिका ✲ प्राधानाचार्या का विद्यालय में महत्व ✲ प्राधानाचार्य के रूप में कार्य ✲ उपसंहार

उत्तर :

(1) मेरा भारत बड़ा निराला

संकेत बिंदु : भूमिका ✲ भारत की प्राचीन संस्कृति ✲ यहाँ की प्राकृतिक भिन्नताएँ ✲ अनेक धर्म, जातियाँ, बोलियाँ,

उनकी वेशभूषा, रहन–सहन का अंतर, अनेकता में एकता ✻ उपसंहार

भूमिका– भारत देश हमारे लिए स्वर्ग है। इसकी मिट्टी में हमने जन्म लिया है। इसकी गोद में झूला झूलकर हम बड़े हुए हैं। इसके अन्न–जल से हमारे प्राण सींचे गए हैं। यह हमारे लिए पूजनीय है। यह हमारा प्यारा भारतवर्ष है।

भारत की प्राचीन संस्कृति– हमारे देश में भरत नाम के एक बड़े प्रतापी राजा थे। वह प्रजा से बहुत प्यार करते थे। प्रजा भी उनका बड़ा आदर करती थी। उसी प्रसिद्ध राजा के नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा। आगे चलकर विदेशी लोगों ने हिंदु बहुल देश होने के कारण इसका नाम हिन्दुस्तान रखा।

यहाँ की प्राकृतिक भिन्नताएँ– यह उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में अंडमान निकोबार तक और पूर्व में अरूणाचल से लेकर पश्चिम में गुजरात तक फैला हुआ है। उत्तर में हिमालय पर्वत भारत माता का प्रहरी है तथा दक्षिण में हिंद महासागर हर पल इसके चरणों को प्रक्षालित करता है। यहाँ पर छः विभिन्न ऋतुएँ हेमंत, शिशिर, बंसत, ग्रीष्म, वर्षा और शरद बारी–बारी से आकर अपनी विशेषताओं से भारत को मनोरम बनाती हैं।

अनेक धर्म, जातियाँ, बोलियाँ, उनकी वेशभूषा, रहन–सहन का अंतर, अनेकता में एकता– यहाँ के लोग विभिन्न ऋतुओं के अनुसार तथा अपने अपने प्रांतों के अनुकूल वेशभूषा धारण करते हैं। उनके रहन–सहन और वेशभूषा में अंतर होते हुए भी उनमें एकता है। हमारा देश विश्व के विशाल राष्ट्रों में से एक है। यहाँ पर सभी धर्मों के लोग निवास करते हैं जिनमें परस्पर प्रेम बना रहता है। हिंदु तथा अन्य संप्रदायों के लोगों के अधिकार समान हैं। इस प्रकार भारत एक ऐसे परिवार की तरह है जो समस्त धर्मों का संगम स्थल है।

यहाँ के निवासियों की पोशाक, चाल–चलन, स्वभाव आदि में भिन्नता होने पर भी इस उपमहाद्वीप की प्राचीन संस्कृति घर–घर में जीवित है। संसार को शांति, अहिंसा और मानवता वसुधैव कुटुंबकम् का संदेश देने वाला भारत सब देशों से निराला क्यों न होगा।

उपसंहार– वस्तुतः हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम अपने देश के लिए अपने समस्त स्वार्थों का त्याग कर दें तथा अपने देश की उन्नति के लिए प्राण–पण से जुट जाएँ तो हम अपना अतीत का गौरव फिर से प्राप्त कर सकते हैं। जो व्यक्ति देश के लिए कुछ नहीं कर सकता उसे तो जीवित भी नहीं रहना चाहिए। क्योंकि–

आता नहीं देश पे मरना जिसे,

उस नीच को जीने का अधिकार नहीं।

(2) मानव जीवन में खेलों का महत्व

संकेत : भूमिका ✻ खेलों के प्रकार ✻ जीवन में खेलों की आवश्यकता ✻ खेल भावना का प्रभाव ✻ हार–जीत का महत्त्व ✻ खेलों की लोकप्रियता का आर्थिक महत्व ✻

भूमिका– मनोविनोद के विभिन्न साधनों में एक लोकप्रिय साधन है– खेलकूद। क्या बालक, क्या बड़े, जीवन में आई नीरसता को दूर रखने के लिए सभी खेलों की ओर आकर्षित होते हैं।

खेलों के प्रकार– यूँ तो खेल कई प्रकार के होते हैं। घर के भीतर खेले जाने वाले खेल जैसे– कैरम, लूडो, ताश, शतरंज आदि। घर के बाहर खेले जाने वाले प्रमुख खेल फुटबॉल, वॉलीबॉल, क्रिकेट, टेनिस, बैडमिंटन, पोलो आदि हैं।

जीवन में खेलों की आवश्यकता– खेलकूद हमारे विकास में कई प्रकार से सहायक होते हैं। कहा गया है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। खेलने से शारीरिक विकास होता है। शरीर के कई रोग दूर होते हैं। शरीर में स्फूर्ति और मन में उमंग का संचार होता है। शरीर सुगठित हो जाता है। स्वस्थ व्यक्ति का मन भी स्वस्थ रहता है।

खेल भावना का प्रभाव– खेलकूद बौद्धिक क्षमता में भी वृद्धि करता है। प्रायः सभी खेलों से मानसिक एकाग्रता, निर्णय लेने की क्षमता और सूझबूझ का विकास होता है। शतरंज का खेल मस्तिष्क का श्रेष्ठ व्यायाम है। प्राचीन कथन है– केवल काम करते रहने और न खेल पाने के कारण बालकों का उचित विकास नहीं होता।

हार–जीत का महत्त्व– खेलों से बालक में धैर्य, क्षमा, सहिष्णुता, खेलभाव आदि गुणों का विकास होता हैं संगठन क्षमता, समायोजन–शक्ति, अनुशासनप्रियता, नेतृत्व भावना, पराजय से संघर्ष की प्रेरणा प्राप्त करना आदि गुण खिलाड़ियों में सामाजिकता की भावना विकसित करते हैं। खेलकूद में हार–जीत का उतना महत्व नहीं होता है, बल्कि उसमें भाग लेना ही प्रमुख होता है।

खेलों की लोकप्रियता का आर्थिक महत्व– खेलकूद हमारी मानसिक, शारीरिक, सामाजिक प्रत्येक प्रकार की उन्नति के साधन हैं किन्तु बालकों को हर समय खेलकूद में ही लीन न रहकर अपने विद्याध्ययन पर भी ध्यान देना चाहिए।

(3) यदि मैं विद्यालय की प्राधानाचार्या होती

संकेत : भूमिका ✻ प्राधानाचार्या का विद्यालय में महत्व ✻ प्राधानाचार्य के रूप में कार्य ✻ उपसंहार

भूमिका– मानव जीवन में कल्पना का बड़ा महत्व है। सतरंगी कल्पना के इन्द्रधनुष मनमोहक सपनों में ढलकर हमारी महत्वाकांक्षाओं के रूप में फलित होते हैं।

ऐसी ही एक मोहक कल्पना मैंने विगत शीत ऋतु में की। घोर शीतकाल, आकाश में छाया घना कोहरा और उस पर ठिठुरते हुए विद्यालय जाने की विवशता। झट से मन में विचार आया कि यदि मैं प्राधानाचार्या होती तो विद्यालय में अवकाश घोषित कर देती और मैं कल्पना में प्राधानाचार्या जी की कुर्सी पर जा आसीन हुई।

प्राधानाचार्या का विद्यालय में महत्त्व– मैंने सोचा था अवकाश घोषित करने का किंतु जब मैं प्राधानाचार्या बनी तो पाया कि

यह संभव नहीं है। जनवरी आ गई, एक-ढेड़ मास में परीक्षाएँ आयोजित करनी हैं। बड़ी कक्षाओं की बोर्ड परीक्षाएँ होने वाली हैं। अवकाश तो बिल्कुल नहीं। हाँ, मेरे प्राधानाचार्या बने मन ने इतना अवश्य किया कि विद्यालय आने का समय दस बजे से दो बजे तक कर दिया। इस प्रकार उसे स्वप्न में ही प्राधानाचार्य के विद्यालय में महत्त्व का आभास हुआ।

प्राधानाचार्य के रूप में कार्य- प्राधानाचार्या के रूप में मैंने दूसरा काम किया महीने में कम से कम एक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के साथ भेंट करने का। मैंने उनकी समस्याओं को जाना और उन्हें दूर करने का प्रयत्न किया। विद्यालय के इस छात्र-शिक्षक-प्राधानाचार्या मिलन से निश्चित ही मेरे विद्यालय का वातावरण सौहार्दपूर्ण हो गया।

मैंने फिर विद्यालय में चैरिटी के नाम पर लिए जा रहे डोनेशन को बंद करवा दिया। मुझे पता था कि मेरे कई सहपाठी विद्यालय द्वारा दी जा रही इन डोनेशन टिकटों को न तो बेच पाते हैं, न खुद खरीद सकते हैं।

उपसंहार- प्राधानाचार्या के रूप में मेरी कल्पना बढ़ती ही जा रही थी कि अचानक माँ की आवाज ने मेरा ध्यान भंग कर दिया। मुझे याद आया प्राधानाचार्या बनने तक की यात्रा तो बहुत लम्बी है। पहले मुझे मन लगाकर पढ़ाई करनी है। तभी तो मैं प्राधानाचार्या बन सकूँगी। अब मैं अपनी कल्पना को अवश्य साकार करूँगी।

12. आपके विद्यालय में वृक्षारोपण समारोह सम्पन्न हुआ। इसका विवरण देते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को एक पत्र लगभग 80-100 शब्दों में लिखकर इसे प्रकाशित करने का अनुरोध कीजिए। 5

उत्तर :

सेवा में,
श्रीमान संपादक महोदय,
कैलाश विहार, सिकंदरा रोड,
आगरा, उत्तर प्रदेश।
दिनांक - 07.03.2019

विषय : वृक्षारोपण समारोह सम्पन्न होने की सूचना प्रकाशनार्थ हेतु।

महोदय,

हमारे केन्द्रीय विद्यालय, वायु सेना नगर स्टेशन आगरा में कल दिनांक 02 जुलाई, 2019 को वृक्षारोपण समारोह सम्पन्न हुआ जिसकी रिपोर्ट आपकी सेवा में भेजी जा रही है। कृपा करके अपने सम्मानित पत्र में जनहित में प्रकाशित करने का कष्ट करें।

दीप प्रज्वलन के साथ विद्यालय अध्यक्ष (नामित) ने विद्यालय में वृक्षारोपण समारोह आयोजित करने की विधिवत् घोषणा की तथा अपनी ओर से सर्वप्रथम एक कदंब का पेड़ लगाया और वृक्षों के महत्व पर प्रकाश डाला। इसके बाद प्रधानाचार्य तथा अन्य शिक्षकों ने खेल के मैदान के चारों ओर पूर्व निर्धारित स्थानों पर वृक्षारोपित किए। प्रत्येक कक्षा की ओर से मॉनीटर ने वृक्ष लगाकर उनके सींचने तथा रक्षा-सुरक्षा करने की प्रतिज्ञा की। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्राचार्य ने सबके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की। सूक्ष्म जलपान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

समाचार प्रेषक
राहुल गुप्ता
कक्षा-X के.वि. ए.एफ.एस., आगरा
दिनाँक-.....

अथवा

अपनी माता जी की बीमारी पर चिंता व्यक्त करते हुए अपने पिताजी को एक पत्र लगभग 80-100 शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

जोशी मार्ग,
जयपुर,
दिनांक : 17 मार्च, 2018

पूज्य पिता जी,

सादर प्रणाम।

मुझे कल ही पता चला कि माता जी अस्वस्थ हैं। यह समाचार प्राप्त होते ही मैं बहुत परेशान हुई। रात भर सो भी नहीं सकी। वैसे तो आप माता जी को किसी अच्छे डॉक्टर के पास ले गए होंगे लेकिन मैं चाहती हूँ कि उनको अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान ले जाएँ क्योंकि वहाँ मेरे मित्र के पिता जी वरिष्ठ चिकित्सक हैं। वे उनकी अच्छी तरह से जाँच-पड़ताल करके रोग के बारे में बता देंगे।

मैं भी एक सप्ताह का अवकाश लेकर घर आ रही हूँ। आप चिंता न करें और माता जी को भी दिलासा दें।

माता जी को मेरा नमस्कार कहिएगा।

आपकी पुत्री
रमा

13. आपके शहर में ऊनी कपड़ों की सेल लगी हैं इसके लिए 25-50 शब्दों का एक विज्ञापन तैयार कीजिए। 5

उत्तर :

सेल! सेल! सेल! सेल!
सभी प्रकार के ऊनी तथा गरम कपड़ों की
स्टॉक क्लियरेंस सेल
डिस्काउंट 35% तक
फ्रैश माल, कंपनी आउटलेट्स, हज़ारों-हज़ार डिज़ाइंस
बाइस्कोप मॉल, 2/64 नेहरू नगर, नागपुर

अथवा

आयशर ट्रैक्टर की खरीद के लिए 25–50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर :

आवश्यकता है
एक आयशर ट्रैक्टर की
मॉडल 2012 के बाद का हो।
अच्छी हालत में धुआँ रहित।
इच्छुक विक्रेता संपर्क करें।
प्रबंधक हनुमान बिल्डर्स, गणेश रोड़, पाली फ़ोन-09493024511

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

This sample paper has been released by website www.cbse.online for the benefits of the students. This paper has been prepared by subject expert with the consultation of many other expert and paper is fully based on the exam pattern for 2019-2020. Please note that website www.cbse.online is not affiliated to Central board of Secondary Education, Delhi in any manner. The aim of website is to provide free study material to the students.